अब हद से निकलो और बेहद में आ जाओ
श्रीमत पर अपना जीवन बहुमूल्य बनाओ
कल्याण करो जगत का आ जाओ मेरे संग
अपने दिल में जगाओ विश्व सेवा की उमंग
वर्सा लेना है तो भाई भाई की दृष्टि अपनाओ
मेहनत कर खुद को देहि अभिमानी बनाओ
मन के भीतर से स्त्री पुरुष का भान निकालो
आत्मिक गुणों को जीवन का आधार बना लो
बाबा की याद से खुद को सतोप्रधान बनाओ
पवित्र बनकर मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा पाओ
जब से पड़ी हमारी आत्मा में विकारों की खाद
तब से होता ही जा रहा जीवन हमारा बर्बाद
बनकर पवित्र खुद को दिव्य गुणों से सजाओ
बनो प्रेमस्वरूप सबमें ईश्वरीय प्यार जगाओ
श्रीमत से बनाओ खुद को सीधा और सच्चा
मन को इतना पवित्र बनाओ जैसे नन्हा बच्चा
योगबल से देह अभिमान को इतना पिघलाओ
देह के सारे रिश्ते भूलकर भाई भाई बन जाओ
छोड़कर अवगुण सारे धारण करो श्रेष्ठ संस्कार

तभी करेगा जगत आपको कोटि कोटि
नमस्कार
ॐ शांति